कितने पाकिस्तान : क्लासिकल अभिरुचि की महागाथा

✍ रोहिताश्व शर्मा

समय काल - स्पेस की सरहदों को पार करते हुए वैश्विक भावभूमि और भारतीय जनजीवन की अंतश्चेतना को झकझोरने वाला उपन्यास है - कमलेश्वर कृत 'कितने पाकिस्तान'। महाकाव्यात्मक स्वरूप के उपन्यासों की चर्चा अक्सर - राल्फ फाक्स के उद्धरण से की जाती है कि बीसवीं शताब्दी के अंत तक महाकाव्यों का स्थान औपन्यासिक कृतियाँ अख्तियार कर लेगी... कतिपय रचनाएँ इस स्तर की हैं पर शिल्प और विजन के स्तर पर 'कितने पाकिस्तान' नामक कृति कलाकारों, संगीतकारों, दार्शनिकों, चित्रकारों के समवेत मानवीय प्रयासों को रेखांकित करने वाली रचना है।

क्लासिकल एप्रोच और पापुलर लिटरेचर के विरोधी ध्रुवान्तों को भी यह कृति अपने कथ्य और शिल्प के स्तर न केवल स्पर्श करती हैं बल्कि अप्रतिहत रहती है। इसमें बाबरी मस्जिद के विध्वंस और राममंदिर के निर्माण की अन्तर्जटिलताएँ हैं ही, साथ में भारत-पाक विभाजन और हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द्य के दर्द भरे पर मानवता परक विलक्षण चित्र भी हैं। सीरियन, मिश्री, यूनानी एशियाई, आर्य - द्रविड़ सभ्यताओं-संस्कृतियों के निर्माण एवं विध्वंस की गाथाएँ हैं तो वैश्वीकरण और साम्राज्यवादी षड़यंत्रों को बेनकाब करने की कोशिश की है। कथ्य के स्तर पर यह कृति एक ओर वैदिक काल से लेकर वर्तमान दौर के दार्शनिक - सांस्कृतिक संक्रमण को दर्शाती है तो दूसरी ओर रोमांटिक पात्रों, कथ्य विवरणों के वर्णन से समसामयिक राजनैतिक समस्याओं पर विमर्श भी रचती है।

'कितने पाकिस्तानी' नामक संश्लेषणात्मक कृति पर अतीत और वर्तमान की कई रचनाओं के प्रभाव की मीमांसा की जाती है। इसकी संरचना और प्रस्तुति में कुरुर्तुल ऐन हैदर के वैश्विक बोधवाले उपन्यास 'आग का दरिया' का प्रभाव तो है ही साथ में शमशेर बहादुर सिंह की ऐतिहासिक - सांस्कृतिक बोध वाली 'अमन का राग' वाली कविता का संस्पर्श सृजनात्मक चेतना के स्तर पर कम नहीं है।

सृजनात्मक वैश्विक विजन और मानवतावादी सोच के आग्रही कमलेश्वर ने इसमें न केवल रोमांटिक तेवर अपनाये हैं बल्कि इतिहास, मिथ, संस्कृति, विश्व-राजनीति के अक्षांसों में विचरण करते हुए - देश-काल, स्पेस-भूगोल की विथियों को फॅण्टेसी शिल्प में इस तरह अन्तर्भुक्त किया है कि पाठक उसके विश्व साहित्य के ज्ञान और भारतीय साहित्य की अंतश्चेतना के संस्पर्श से अभिभूत हो जाता है। यह कृति - अन्यान्य कृतिकारों के लिए न केवल प्रेरणादायक कृति है बल्कि औपन्यासिक इतिहास में एक स्पृहणीय दस्तावेज है।

कहा भी गया है कि कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास मानवता के दरवाजे पर इतिहास और समय की एक दस्तक है। इस उम्मीद के साथ कि भारत ही नहीं दुनिया भर में उपनिवेशवाद, साम्राज्यवादी आतंक, विद्वेष और महायुद्ध की विभीषिका तथा साम्प्रदायिक जनून का खात्मा हो सके। 'इण्डिया टुडे' पत्रिका में इस पर टिप्पणी रही है कि 'कितने पाकिस्तान' कृति एक अविस्मरणीय दस्तावेज है। हिन्दी में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं की ऐसी गम्भीर पड़ताल करता हुआ, इतने गहरे बौद्धिक विमर्शवाला उपन्यास अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

औपन्यासिक विजन और शिल्प से गहरे सरोकार रखने वाले गोपालराय जैसे तल्ख आलोचक का अभिमत रहा है कि "कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में साम्प्रदायिक विरोधी विजन है, जो धर्म, राजनीति, क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा, भौतिक सुखों की होड़, प्रजातीय और बौद्धिक अहंकार आदि के तहत देश, दुनिया और मानवता को बाँटने, एक-दूसरे से अलग और लहु-लुहान करने की दानवी प्रवृत्ति के अंकन और उसके प्रतिरोध से युक्त है।" (हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ० 438) लेकिन शिल्प के स्तर पर इस कृति की विशिष्टता की ओर वे ध्यान नहीं दे पाये हैं। जबकि हिंदी कथा साहित्य के वयोवृद्ध और गाँधीवादी विचारधारा के संरक्षक विष्णु प्रभाकर ने अभिमत रखा है कि कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की संरचना में उपन्यास के बने बनाये ढाँचे को तोड़ दिया है और लेखकीय अभिव्यक्ति के सब कुछ सम्भव बनाने का दुर्लभ द्वार खोल दिया है।

क्लासिकल एप्रोच की इस विवेच्य कृति को राजेन्द्र यादव ने इतिहास और भूगोल की सीमाओं को तोड़ने का प्रयास अभिज्ञापित किया है, जो मनुष्य की वास्तविक समस्याओं और चिन्ताओं को सामने रखने की कोशिश करती है। वास्तव में काल, समय, स्पेस को अति क्रमित करके अतीत और भविष्य के अक्षांस और देशांस - रेखाओं में अन्तर्विलयित यह कृति मानवीय उदात्तता और उत्कट जिजीविषा की लोमहर्षक कृति है। कृतिकार का निर्णय युद्ध और हिंसा, विद्वेष और विध्वंस के मुकाबले सृजन सौन्दर्य और रागात्मक संसम्पृक्ति का है। अदीबे आलिया (कथा नैरेटर) और कासिद महमूद अर्दली न केवल वर्तमान दौर की समस्याओं - बाबरी मस्जिद विध्वंस, पाकिस्तान की दोहरी षड़यंत्र नीति - से दो चार होते हैं बल्कि ग्रीक - रोमन सीरियन - मिश्री - मिथकों और प्रतीकों के गिलमगेरा से लेकर - अकबर, औरंगजेब, दाराशिकोह को मानवीय विकास के रू-ब-रू सकारात्मक और नकारात्मक, विध्वंस और निर्माण के पक्ष-विपक्ष में खड़े कर देते हैं।

रोमांटिक भावबोध और रिक्तता बोध के विलक्षण वर्णन में समर्थ अमृता प्रीतम भी 'कितने पाकिस्तान' नामक औपन्यासिक कृति को बीसवीं शताब्दी की प्रतिनिधि कृति स्वीकारती हैं। उनकी स्वीकारोक्ति है कि अच्छी पुस्तकें हर काल में सामने आती हैं, आती रहेंगी, लेकिन यह पुस्तक जिस मुकाम पर पहुँची है, वह हमेशा बनी रहेगी।

विश्व उपन्यास की कोटि में भारतवर्ष की जो दो रचनाएँ निसन्देह सर्वोपरि मानी जायेगी। वे हैं कुरुर्तुल ऐन हैदर कृत 'आग का दरिया' और कमलेश्वर कृत 'कितने पाकिस्तान'। जो विचारधारा दर्शन और मानवीय विकास के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विलक्षण तो है ही साथ में शिल्प स्थापत्य के क्षेत्र में अप्रतिम भी। हिमांशु जोशी ने भी 'कितने पाकिस्तान' कृति को हिन्दी के प्रथम विश्व उपन्यास की संज्ञा देने का प्रस्ताव रचा है जो एक सरलीकृत भावावेश वाली टिप्पणी है। कारण हिन्दी हो या उर्दू, जो एक ही देश हिन्दुस्तान की हम शीदा जबाने हैं। दोनों की वाक्य रचना और अभिव्यक्ति के क्रिया पद एक हैं, ...लिपि भले ही देवनागरी और नुस्तलिक हो। कुरुर्तुल ऐन हैदर कृत 'आग का दरिया' में पहले भी वैदिक संस्कृति, चार्वाक - लोकायत, ब्राह्मण और बौद्ध संस्कृति की टकराहट सम्बन्धी अवधारणा व्यक्त हुई है। पात्र अपने जीवन में असफल प्रेम और अतृप्ति के शिकार हैं अतः मुगलकाल में वे बौद्धिक विमर्श सीरियन, मिश्री सभ्यता, इस्लाम के प्रादुर्भाव और सूफी दर्शन पर कर पाते हैं। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान भारतीय पुनर्जन्य की अवधारणा के अनुकूल उपन्यासगत वे पुरातन प्रेमी पुनः असफल प्रेम के शिकार रहकर भी - वैश्विक समस्याओं पर विमर्श कर लेते हैं। अतः काल समय और स्पेस का अतिक्रमण वहाँ वैचारिक दर्शन, विश्व सभ्यता के विकास,

संस्कृतियों के आविर्भाव और द्वन्द्व का ही नहीं है बल्कि रोमांटिक भावनाओं, मानवीय मूल्यों और स्वातंत्र्य सम्बन्धी जिजीविषा का है।

'कितने पाकिस्तान' नामक कृति अपने विलक्षण विवेचन में, शैली स्थापत्य के अनूठे कलेवर में काल - समय - स्पेस तथा इतिहास भूगोल की आवृत्ति का कई बार अतिक्रमण करती है। कथा नायक कहिए या उपन्यास का नैरेटर व्यक्तित्व एक अजीबो-गरीब पर आत्मविश्लेषणकर्ता, संवेदनशील पर वैश्विक बोध से अनुप्राणित - अदीबे आलिया है बिल्कुल मुगल-ए-आजम की तर्ज पर। वह न केवल विश्व की सृजनात्मक आशंसा, लेखन और स्वातंत्र्य चेतना का प्रतिनिधित्व ही नहीं करता है बल्कि शांति, संगीत, चित्रकला और मानवीय मूल्यों की दुनियाँ का सर्वग्राही सृजक विवेचनकर्ता भी है -

.....उपन्यास का प्रारम्भ कमलेश्वर की आदिम कैशोर्य रोमांचिकता के भावबोध, - कस्बाई मानसिकता के जिक्र से होता है। फिल्मी स्टाईल में ... एक भूली हुई दास्तान - याद आती है, पुराने गीत के लय की तरह। संचार माध्यम - कैमरे और दूरदर्शन की चकाचौंध में फंसे हुए - बुद्धिजीवी की आर्तध्वनि। जो काव्यमय इजहार भी है .... नीम के झरते हुए फूलों के दिन (केदारनाथ सिंह का प्रभाव) कनेर में आती पीली कलियों के दिन (गिरिजा कुमार माथुर का काव्य प्रभाव) न बीतनेवाली दोपहरियों के दिन। (कमलेश्वर मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव की पुरानी मध्यवर्गीय कस्बाई अभिव्यक्ति) .... विदा के समय कानपुर रेलवे स्टेशन पर रूमाल गिरने का जिक्र, (फिल्मी भावबोध लाँग शाट एवं क्लोज अप) यह विधा नायिका का कैशोर्य प्रेम है.... जो काल परिस्थिति के अनुरूप विभाजन की त्रासदी में मुस्लिम पात्र से ब्याह दी गयी है। कालान्तर में उसका युवा परवेज (मुशर्रफ - परवेज पर पोएटिक व्यंग्य) ....जो पाकिस्तान हाई कमीशन में सेक्रेटरी कल्चरल एण्ड इन्फॉर्मेशन का अभियन्ता है। ... बीच-बीच में गालिब की तल्खियत भी अनुगूंज करती है। विद्या के प्रेमपत्र में वर्षों पहले जिक्र था - वफा कैसी, कहाँ का इश्क, जब सर फोड़ना ठहरा। तो फिर ऐ संगे दिल, तिरा ही संगे-आस्तां क्यों न हो। वास्तव में अपनी वर्णनात्मक संरचना में कमलेश्वर ने फैंण्टेसी शिल्प का प्रयोग बहुत ही सार्थक रूप में रचा है। दिवा स्वप्न, यथार्थ और स्वप्न का मिला जुला पैटर्न।

जो कार्य भारतीय संस्कृति, दर्शन इतिहास, समाजशास्त्र के क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन, राधाकमल मुकर्जी, डी०डी० कौशाम्बी, भगवत शरण उपाध्याय और के० दामोदरन आदि ने किया है .... उसका औपन्यासिक दर्शन - विजन और समाहार कितने पाकिस्तान कृति में परिलक्षित होता है।

वैश्विक पात्र युरुक के सम्राट गिलमगेश का निम्न आप्त वाक्य पूरे उपन्यास का बीज कथन है - ....मैं पीड़ा से लड़ूँगा, यातना सहूँगा, कुछ भी हो मैं मृत्यु को पराजित करूँगा ... मैं मृत्यु से मुक्ति की औषधि खोल कर लाऊँगा। (पृ० 24) स्त्री-विमर्श के दुर्लभ वर्णन उपन्यास में अनुस्यूत है - ईना के प्रेम मन्दिर की सौंदर्यशाली देवदासी रुना - नारी देह के शोषण का प्रतिकार रचती है। ग्रीक माइथोलोऊ और भारतीय मिथक शास्त्र का कलात्मक उपयोग कमलेश्वर ने विवेच्य उपन्यास में किया है।

गोपाल राय ने हिन्दी उपन्यास का इतिहास में सार्थक अभिमत - इस संदर्भ में रचा है कि 'कमलेश्वर अपने उपन्यास 'कितने उपन्यास' में अपने विजन के प्रति ईमानदार और प्रतिबद्ध हैं। पर यह ईमानदारी और प्रतिबद्धता आवेश की हदों तक छूती जान पड़ती है। इससे संवेदना के स्थान पर आवेग और विवेक के स्थान पर आवेश की प्रधानता है। (पृ० 257)

परन्तु इसमें दो राय नहीं है कि उपन्यासकार का विश्व इतिहास, मिथक शास्त्र का ज्ञान विशेषकर भारतीय इतिहास का ज्ञान आम पाठक को अभिभूत करने वाला है, जिसे फॅण्टेसी शैली में प्रस्तुत कर पाठक वर्ग को आकर्षित करने का अद्‌भुत कौशल नुमायाँ हुआ है। वास्तव में इक्कीसवीं सदी ही इस बात का फैसला करेगी कि यह उपन्यास कितना कालजयी है और मूल्य मीमांसा पर कितना अप्रतिहत है, शिल्प के स्तर पर कितना लासानी है, संरचना, संवेदना और अभिव्यक्ति के स्तर पर समकालीन उपन्यासों में किस कदर श्रेष्ठ हैं।

***